Course – BA Education Hons, part II
paper – III Educational Psychology & Pedagogy
Topic – Micro Teaching
prepared by – Dr Sangeeta Kumari

इकाई 18 : सूक्ष्म शिक्षण
unit 18 : MICRO TEACHING

18.1 सूक्ष्म शिक्षण का अर्थ (Meaning of Micro Teaching)

सूक्ष्म शिक्षण अध्यापकों को कक्षा अध्यापन प्रक्रियाओं की शिक्षा देने हेतु नवीन प्रशिक्षण प्रणाली है। पिछले एक दशक में इतना तो स्पष्ट हो ही गया है कि अध्यापकों के प्रशिक्षण में इस प्रणाली को कम समय में अधिक उपयोगी पाया गया है। सूक्ष्म शिक्षण का विकास ऐलन (Allen) ने 1963 में ~~स्टैनफोर्ड~~ विश्वविद्यालय में शिक्षण व्यवहारों के विकास के लिए किया। सूक्ष्म शिक्षण छात्र अध्यापकों में शिक्षण कौशलों को विकसित करने की एक व्यूह रचना है।

बी॰ एम॰ शॉर (B·M·Shore) के अनुसार,
"सूक्ष्म शिक्षण कम समय, कम छात्रों तथा कम शिक्षण क्रियाओं वाली प्रविधि है।
"Micro Teaching is real teaching, reduced in time, no·of students and range of activities".

डी॰ ऐलन (D·Allen) के अनुसार,
"सूक्ष्म शिक्षण को लघु क्रियाओं में बाँटना होता है।"
"Micro Teaching is the scaled down teaching encounter."

बी॰ के॰ पासी (B·K·Passi) के अनुसार,
" यह एक प्रशिक्षण की तकनीक है जिसकी छात्र-अध्यापक को विशिष्ट अध्यापन कौशलों के

प्रयोग की जानकारी के लिए आवश्यकता है जिससे यह कम समय में तथा कम विद्यार्थियों में समझ आ सके।"

"Micro Teaching is a training technique which requires students teachers to teach a single concept using specified teaching skill to a small number of pupils in a short duration of time"

18.2 सूक्ष्म-शिक्षण की विशेषताएँ (characteristics of Micro-teaching)

(1) पाठ का निदेशन द्वारा संभव है।
(2) इसमें व्यवहारों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाता है। इसलिए वांछित परिवर्तनों तक इस प्रविधि द्वारा शीघ्र पहुंचा जा सकता है।
(3) इस प्रविधि में शिक्षण कौशल, पाठ्यवस्तु तथा कक्षा अनुशासन आदि कक्षा के हर पक्ष को सरल किया जा सकता है।
(4) पाठ के तुरंत पश्चात ही छात्र-अध्यापक को पृष्ठ पोषण दिया जाता है।
(5) इसी पृष्ठ पोषण के आधार पर छात्रों को अपना पाठ पुनः नियोजित करने का अवसर मिलता है।
(6) शिक्षण और शिक्षण की परिस्थितियों पर इसमें अधिक प्रभावशाली नियंत्रण रखा जा सकता है।
(7) छात्र-अध्यापक किसी एक कौशल का बार-बार अभ्यास कर सकते हैं।
(8) छात्रों के विभिन्न पाठों की तुलना करने का अवसर मिलता है क्योंकि इसमें पुनः नियोजन के पश्चात पाठ को दोहराया जाता है।

18.3 सूक्ष्म शिक्षण के सोपान (steps involved in Micro Teaching)

1. सोपान (Step 1) अभिविन्यास (orientation)

सबसे पहले सोपान में छात्र-अध्यापकों को सूक्ष्म शिक्षण सम्बन्धी आवश्यक बुनियादी जानकारी दी जानी चाहिए। जैसे:- सूक्ष्म शिक्षण का अर्थ, प्रत्यय, महत्व, उपयोग, कार्य पद्धति आदि।

Scanned with CamScanner

2. सोपान-2 (Step-2) शिक्षण कौशलों की चर्चा (Discussion of Teaching skills)

इस सोपान में विभिन्न शिक्षण कौशलों से परिचित करवाया जाना चाहिए। इसके लिए शिक्षण कौशलों के पदकों, शिक्षण कार्यों में शिक्षण कौशलों का उपयोग और महत्व आदि बताया जाना चाहिए।

3. सोपान-3 (Step-3) विशिष्ट शिक्षण कौशल का चयन (Selection of a particular Teaching Skill)

शिक्षण की प्रक्रिया में एक समय में केवल एक ही कौशल का अभ्यास हो सकता है। अतः विभिन्न शिक्षण कौशलों में से किसी एक का चयन किया जाता है।

4. सोपान-4 (Step-4) आदर्श पाठ प्रस्तुतीकरण (Presentation of a model Demonstration lesson)

विशिष्ट चुने हुए शिक्षण कौशल की पूरी जानकारी के पश्चात आदर्श सूक्ष्म पाठ छात्र-अध्यापकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

5. सोपान-5 (Step-5) आदर्श पाठ का निरीक्षण और समालोचना (Observation and Criticism of the Model lesson)

आदर्श पाठ के निरीक्षण और समालोचना का तरीका भी छात्र-अध्यापकों को बताया जाना चाहिए। प्रत्येक कौशल के अलग-अलग निरीक्षण-प्रपत्र होते हैं।

6. सोपान-6 (Step-6) सूक्ष्म पाठ योजना की तैयारी (Preparation of micro lessons)

इस सोपान में चुने हुए विशिष्ट शिक्षण कौशल के अभ्यास के लिए उससे सम्बन्धित सूक्ष्म पाठ योजना छात्र अध्यापक द्वारा तैयार की जाती है।

7. सोपान-7 (Step-7) शिक्षण सत्र (Teaching Session)

इस सोपान में सूक्ष्म शिक्षण प्रारंभ किया जाता है। इसके लिए 5 से 10 विद्यार्थियों के समूह को 5-6 मिनट तक विशिष्ट चुने गए शिक्षण कौशल

Scanned with CamScanner

का प्रयोग करते हुए छात्र-अध्यापक द्वारा पढ़ाया जाता है।

8. सोपान-8 (Step-8) पृष्ठपोषण (feedback):-

इस सोपान में छात्र-अध्यापक को उसके सूक्ष्म-पाठ के लिए तुरंत पृष्ठपोषण मिलना चाहिए अर्थात् उसकी कमियों के उसे उसी समय अवगत कराया जाना चाहिए ताकि वह उसमें सुधार ला सके। पृष्ठपोषण के लिए 6 मिनट का समय दिया जा सकता है।

9 सोपान-9 (Step-9) पुनः पाठ-योजना बनाना (Replanning the Lesson Plan)

पृष्ठपोषण में बताई कमियों के आधार पर सूक्ष्म पाठ को फिर से आयोजित किया जाता है। छात्र-अध्यापक स्वयं ही उसे पुनः नियोजित करता है। इस पुनः नियोजन के लिए 12 मिनट का समय दिया जाता है।

10 सोपान-10 (Step-10) पुनः अध्यापन (Re-teaching):-

पुनर्नियोजित सूक्ष्म पाठ को 6 मिनट के लिए फिर उसी समूह को पढ़ाया जाता है और वही निदर्शन माध्यम प्रयोग किया जाता है। इसे छात्र को पुनः शिक्षण छात्र (Re-teach Session) कहते हैं।

11 सोपान-11 (Step-11) पुनः पृष्ठपोषण (Re feedback):-

पुनः पढ़ाए गए सूक्ष्म पाठ के समाप्त होने पर छात्र अध्यापक को फिर से पृष्ठ-पोषण दिया जाता है। यह कार्य भी 6 मिनट के लिए चलता है।

12 सोपान-12 (Step-12) सूक्ष्म शिक्षण चक्र की पुनरावृत्ति (Repetition of the micro teaching session)

इस प्रकार सूक्ष्म-शिक्षण चक्र तब तक चलता रहता है जब तक छात्र-अध्यापक को यह पूर्ण संतोष न हो जाए कि उसने शिक्षण कौशल में कुशलता अर्जित कर ली है।

Scanned with CamScanner

शिक्षण —	6 मिनट
प्रतिपुष्टि —	6 मिनट
पुनः योजना —	12 मिनट
पुनः शिक्षण —	6 मिनट
पुनः प्रतिपुष्टि —	6 मिनट
योग —	36 मिनट

अर्थात् एक शिक्षण कौशल के एक बार अभ्यास हेतु 36 मिनट का समय निर्धारित किया गया है।

18. सूक्ष्म शिक्षण के लाभ (Advantages of Micro Teaching)

(1) यह वास्तविक प्रशिक्षण विधि है।
(2) यह सेवापूर्व तथा सेवाकालीन शिक्षण में उपयोगी है।
(3) यह व्यक्तिगत प्रशिक्षण की विधि है।
(4) यह विशिष्ट कौशल के प्रशिक्षण में सहायक है।
(5) यह अध्यापक के व्यवहार में संशोधन में सहायक है।
(6) यह प्रभावशाली प्रतिपुष्टि का साधन है।
(7) यह स्व मूल्यांकन करने में सहायक है।
(8) विषय वस्तु छोटे 2 इकाइयों में प्रस्तुत किया जाता है।
(9) यह विद्यार्थी के समय तथा शक्ति की बचत करता है।
(10) यह निरन्तर प्रशिक्षण प्रदान करके शिक्षण कला में निखार लाती है।

Scanned with CamScanner

18.5 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

Q1 Define microteaching. Describe the steps involved in microteaching

सूक्ष्म शिक्षण को परिभाषित कीजिए। सूक्ष्म शिक्षण के सोपान का वर्णन कीजिए।

Scanned with CamScanner